परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, इन्दौर

शैक्षणिक सत्र 2020-21

कक्षा - आठ विषय - हिन्दी

वसंत भाग - ३

पाठ11 - जब सिनेमा ने बोलना सीखा

मौड्यूल- 2

प्रस्तुतकर्त्री
मंजू देवी, प्र. स्ना. अ. (हिन्दी / संस्कृत)

वसंत
भाग 3
कक्षा 8 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

कक्षा 8 पाठ 11

जब सिनेमा ने बोलना सीखा

हिन्दी

(प्रदीप तिवारी)

पाठ का सारांश

आलम आरा’ पहली सवाक फिल्म है। ये फिल्म 14 मार्च 1931 को बनी। इसके निर्देशक अर्देशिर एम ईरानी थे। इसके नायक बिट्ठल तथा नायिका जुबैदा थी। अर्देशिर को इस फिल्म को बनाने के बाद ‘भारतीय सवाक फिल्म का पिता’ कहा गया। इस फिल्म का पहला गाना “दे दे खुदा के नाम” था। ये फिल्म 8 सप्ताह तक हाउस फुल चली थी।

इस फिल्म में सिर्फ तीन वादय यंत्र प्रयोग किये गए थे। आलम आरा फिल्म फैंटेसी फिल्म थी। फिल्मे ने हिंदी-उर्दू के तालमेल वाली हिंदुस्तानी भाषा को लोकप्रिय बनाया। इसी फिल्म के उपरान्त ही फिल्मों में कई ‘गायक - अभिनेता’ बड़े परदे पर नज़र आने लगे। आलम आरा भारत के अलावा श्रीलंका, बर्मा और पश्चिम एशिया में पसंद की गई। इसी सिनेमा से सिनेमा का एक नया युग शुरू हो गया था।

शब्द - अर्थ

चर्चित - मशहूर
मौजूद - उपस्थित
उपलब्धि - प्राप्ति
नियंत्रण - काबू में
तीखी - तेज
देह - शरीर
दैनिक - हर रोज
स्टाइल - तरीका

मुश्किलें - कठिनाइयाँ
स्टंट्मैन - करतब दिखाने वाला
करार - घोषित
प्रतिभा - योग्यता
आजादी - स्वतंत्रता
प्रतिबिम्ब - छवि
जनक - पिता

पाठ की व्याख्या

उनके चयन को लेकर --------------------- -----------------------------------प्रमुख स्तंभ बने।

जब विट्ठल को फिल्म के नायक के रूप में चुना गया तो उनके बारे में एक कहानी बहुत ही मसहूर है कि विट्ठल को उर्दू बोलने में मुश्किलें आती थीं। पहले तो उनका बतौर नायक चयन किया गया मगर उर्दू न बोल पाने के कारण उन्हें फिल्म में नायक की भूमिका से हटाकर उनकी जगह मेहबूब को नायक बना दिया गया। मेहबूब भी एक बहुत ही प्रसिद्ध और बेहतरीन कलाकार रहे हैं।

जब विट्ठल की जगह मेहबूब को नायक बना दिया गया तो विट्ठल नाराज़ हो गए और अपना हक पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया। वह इस बात को लेकर अदालत में पहुँच गए कि पहले उनका चयन किया गया था और अब उनके स्थान पर किसी और को रख लिया गया है। उस समय में उनका मुकदमा मोहम्मद अली जिन्ना ने लड़ा। जोकि बहुत ही मशहूर वकील थे। विट्ठल मुकदमा जीते और भारत की पहली बोलती फिल्म के नायक बनें।

विट्ठल के काम को लोगों ने बहुत पसंद किया और आगे आने वाली फिल्मों में भी विट्ठल ने अपना योगदान दिया। हिंदी सिनेमा में वे लंबे समय तक नायक और करतब करने वाले नायक के रूप में मौजूद रहे। इसके अलावा 'आलम आरा' में सोहराब मोदी, पृथ्वीराज कपूर, याकूब और जगदीश सेठी जैसे बेहतरीन कलाकार भी मौजूद रहे जो आगे चलकर फिल्मोद्योग के प्रमुख स्तंभ बने और इनकी पीढ़ी-दर-पीढ़ी आज भी हम उनके बेहतरीन योगदान को याद करते हैं।

यह फिल्म 14 मार्च 1931 ---------------तैयार किया गया था।

फिल्म आलम आरा 14 मार्च 1931 को मुंबई के 'मैजेस्टिक' सिनेमा में प्रदर्शित हुई। फिल्म 8 सप्ताह तक 'हाउसफुल' रही। लोगों ने उसे बहुत पंसद किया। पूरे सिनेमा हाल में बैठने की जगह नहीं थी। भीड़ इतनी ज्यादा हो जाती थी कि पुलिस के लिए भीड़ को नियंत्रण करना मुश्किल हो जाया करता था। इस फिल्म को इतना पसंद किया गया कि इसे देखने के लिए सिनेमा हॉलों में लोगों की भीड़ जम जाती थी।

फिल्म की जांच करने वाले लोगों ने इस फिल्म की जांच-पड़ताल की और उन्होंने इस फिल्म को 'भड़कीली फैंटेसी' फिल्म करार दे दिया, क्योंकि इस फिल्म में पहली बार भड़कीली भाषा और पोशाक का इस्तेमाल किया गया था। मगर दर्शकों के लिए यह फिल्म एक अनोखा अनुभव थी, उनके लिए यह एक नई तरीके की फिल्म थी। पहले मूक फिल्में बनती थीं, उनमें किसी तरह के गीत-संगीत और संवाद नहीं होते थे और यह एक नया परिवर्तन था जो लोगों को पंसद आया। जब यह फिल्म बनकर तैयार हुई तो उसकी रील 10 हजार फुट लंबी थी और इस फिल्म को बनाने में चार महीनों का कठिन परिश्रम करना पड़ा था तब जाकर यह फिल्म तैयार हुई थी।

सवाक् फिल्मों के लिए ----------------------सामना करना पड़ा।

जब बोलती फ़िल्में बनने लगी तो पुराने समय की कहानियों जैसे महाभारत, रामायण, हरिचंद्र की कथा, इन पर फ़िल्में बनाई गई। पारसी धर्म के लोग जो स्टेज़ पर नाचते-खेलते थे, उनकी कहानियों पर आधारित फिल्में बनी। अरब देश में जो नायक-नायिकाऐं थी, प्रेमी और प्रेमिकाओं की मशहूर कहानियाँ थी, उनको भी फिल्म का विषय चुना गया। इनके अलावा समाज में जो मुददे थे, जिन्हें उठा कर समाज में सुधार लाया जा सकता था। इस तरह के विषयों को भी चुना गया और उनपर भी फिल्में बनाई गई। ऐसी ही एक फिल्म थी ‘खुदा की शान।’ यह वह समय था जब हमारे देश पर ब्रिटिश सरकार का प्रशासन था और उनकी नजर हमारे दवारा बनाई गई फिल्मों पर थी कि कहीं किसी तरह से कोई भी फिल्म उनके खिलाफ तो नहीं इसलिए उनकी नजर इस फिल्म पर पड़ी। इस फिल्म में जो मुख्य पात्र था, वह महात्मा गांधी जैसा प्रतीत हो रहा था। ब्रिटिश सरकार को आभास हो रहा था कि कहीं इस फिल्म में उनके खिलाफ तो कोई संदेश नहीं दिया जा रहा। इसलिए इस फिल्म के निर्माण पर ब्रिटिश सरकार अपनी नज़र बनाए हुए थी।

सवाक् सिनेमा के ----------------------जरूरी योगदान दिया है।

सवाक् सिनेमा के नए दौर की शुरुआत करने वाले निर्माता-निर्देशक अर्देशिर इतने विनम्र थे कि जब 1956 में 'आलम आरा' के प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे हुए यह फिल्म1931 में बनकर तैयार हुई थी तो 1931 से लेकर 1956 तक पूरे 25 वर्ष हो गए थे तो इस ख़ुशीमें उन्हें सम्मानित किया गया और उन्हें सवाक् फिल्मों का पिता कहा गया। तो इस मौके पर उन्होंने कहा कि उन्हें इतनी बड़ी उपाधि देने की जरूरत नहीं है क्योंकि वह बहुत ही बड़े विनम्र स्वभाव के थे और वह मानते थे कि उन्होंने कोई बड़ा काम नहीं किया है। यह तो उनका उनके देश के लिए बहुत छोटा सा योगदान है।

जब पहली बार------------------------------ होकर उभरने लगा।

जब पहली बार सिनेमा में आवाज को स्थान दिया गया, तो सिनेमा में काम करने के लिए पढ़े-लिखे अभिनेता-अभिनेत्रियों की जरूरत को भी महसूस किया जाने लगा क्योंकि अब केवल अभिनय से काम नहीं चलने वाला था, क्योंकि अब संवाद लिखे जाने लगे थे और अभिनेता-अभिनेत्रियों को संवाद पढ़कर याद कर बोलने पढ़ते थे, इसलिए कहा गया है कि पढ़े-लिखे लोगों की आवश्यकता महसूस होने लगी थी।

मूक फिल्मों के समय में तो पहलवान जैसे शरीर वाले, करतब करने वाले और उछल-कूद करने वाले अभिनेताओं से काम चल जाया करता था क्योंकि उसमें किसी तरह के संवाद या गीत गाने की आवश्यकता नहीं थी। परन्तु जब सवाक् फिल्में बनाने लगी तो उसमें गीत-संगीत और संवाद को जगह दी गई थी और अभिनेता-अभिनेत्रियों को संवाद बोलने थे यानी कि एक प्रभावशाली संवाद बोलना जिसको सुनकर दर्शक आकर्षित हो और उन पर बेहतरीन असर छोड़ कर जाए और इनमें शामिल किये गए गीत-संगीत को भी कद्र की दृष्टि से देखा जाने लगा था।

जब सवाक् फिल्मों में संवाद, गीत-संगीत को महत्त्व दिया जाने लगा तो 'आलम आरा' के बाद आरंभिक 'सवाक्' दौर की फिल्मों में कई गायक-अभिनेता बड़े पर्दे पर नजर आने लगे अर्थात् वो अभिनेता जो गीत भी गा सकते थे, वह भी सिनेमा पर्दे पर नजर आने लगे। भारत में हिन्दी और उर्दू के तालमेल वाली हिन्दुस्तानी भाषा का प्रयोग बढ़ा। सिनेमा की तकनीक की भाषा की जगह लोगों की भाषा फिल्मों में आम-बोलचाल की भाषाओं का प्रवेश हुआ। क्योंकि यह लोगों को अधिक पंसद आती थी, लोग इससे फिल्म के साथ जुड़ाव महसूस करते थे।

सिनेमा में जब से आम बोल-चाल की भाषा का प्रयोग होने लगा तब से सिनेमा ज्यादा आम जग से जुड़ गया। यह एक तरह की नयी आज़ादी थी, जिससे आगे चलकर आम लोगों की जीवन की परछाई फिल्मों में दिखाई देने लगी। लोगों को ऐसा लगता जैसे कि उन्हीं की कहानी प्रदर्शित हो रही हो। वह अपनी ही जीवन से जुड़ी कहानी देख रहे हों।

अभिनेताओं-अभिनेत्रियों की ---------------- शुरू हो गया था।

उस समय जो भी अभिनेता और अभिनेत्री फिल्म में अभिनय कर रहे थे, वे जैसा पहनवा पहन रहे थे और जिस तरह के फैशन का इस्तेमाल किया जा रहा था, उसका असर लोगों पर पड़ रहा था। 'माधुरी' नाम की फिल्म में नायिका सुलोचना की हेयर स्टाइल उस दौर में औरतों में लोकप्रिय थी। सभी औरतें उसके जैसा ही हेयर-स्टाइल बनाने लगी थी।

औरतें अपने बालों को उसी तरह बनाने लगी थी जिस तरह अभिनेत्रियाँ फिल्म में बनाया करती थी। अर्देशिर ईरानी की फिल्मों में भारतीय कलाकारों को ही नहीं ईरानी अर्थात् दूसरे देश के कलाकार भी अभिनय कर रहे थे। आलम आरा भी वह फिल्म थी जो सिर्फ भारत में ही नहीं सराही गई बल्कि उसे दूसरे देशों में भी उतना ही पसंद किया गया जैसे कि श्रीलंका, बर्मा और पश्चिम एशिया।

जब भारतीय सिनेमा की शुरूआत हुई, तब से प्रथम फिल्म बनाने वाले फाल्के को फिल्म जगत का जनक कहा जाता है, जिनसे फिल्मों का आरम्भ हुआ। अब जब सवाक् फिल्में बनने लगी थी और उसके जनक यानी कि उसके पिता अर्देशिर इर्रानी को जो उपलब्धि दी गई थी वह उन्हें स्वीकार करनी ही थी क्योंकि वहाँ से सिनेमा का एक नया युग शुरू हो गया था। अब सवाक् फिल्में बनने लगी थी। एक बड़ा परिवर्तन हिन्दी सिनेमा जगत में देखने को मिला था।

प्रश्न - उत्तर (पाठ से)

प्रश्न4: विट्ठल का चयन आलम आरा फिल्म के नायक के रूप हुआ लेकिन उन्हें हटाया क्यों गया? विट्ठल ने पुन: नायक होने के लिए क्या किया? विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर: विट्ठल को फ़िल्म से इसलिए हटाया गया कि उन्हें उर्दू बोलने में परेशानी होती थी। पुन: अपना हक पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया। विट्ठल मुकदमा जीत गए और भारत की पहली बोलती फिल्म के नायक बनें।

प्रश्न5: पहली सवाक् फिल्म के निर्माता-निदेशक अर्देशिर को जब सम्मानित किया गया तब सम्मानकर्ताओ ने उनके लिए क्या कहा था? अर्देशिर ने क्या कहा? और इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की है? लिखिए।

उत्तर: पहली सवाक् फिल्म के निर्माता-निर्देशक अर्देशिर को प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर सम्मानित किया गया और उन्हें "भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता" कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा था, - "मुझे इतना बड़ा खिताब देने की जरूरत नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है।" इस प्रसंग की चर्चा करते हुए लेखक ने अर्देशिर को विनम्र कहा है।

भाषा की बात

प्रश्न 1: सवाक् शब्द वाक् के पहले 'स' लगाने से बना है। स उपसर्ग से कई शब्द बनते हैं। निम्नलिखित शब्दों के साथ 'स' का उपसर्ग की भाँति प्रयोग करके शब्द बनाएँ और शब्दार्थ में होनेवाले परिवर्तन को बताएँ। हित, परिवार, विनय, चित्र, बल, सम्मान।

उत्तर: शब्द - उपसर्ग वाले शब्द

हित - सहित
परिवार - सपरिवार
विनय - सविनय
चित्र - सचित्र
बल - सबल
मान - सम्मान

भाषा की बात

प्रश्न 2: उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दांश होते हैं। वाक्य में इनका अकेला प्रयोग नहीं होता। इन दोनों में अंतर केवल इतना होता है कि उपसर्ग किसी भी शब्द में पहले लगता है और प्रत्यय बाद में।
हिंदी के सामान्य उपसर्ग इस प्रकार हैं - अ/अन, नि, दु, क/कु, स/सु, अध, बिन, औ आदि।
पाठ में आए उपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्दों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं -

मूल शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय	शब्द
वाक्	स	--	सवाक्
लोचना	सु	--	सुलोचना
फिल्म	--	कार	फिल्मकार
कामयाब	-	ई	कामयाबी

इसी तरह आप भी उपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्दों के निर्माण कीजिए ।

इति

धन्यवाद